संदर्भ

१) यशपाल - सिंहावलोकन (प्रथम भाग) - ८४.

२) वही - ५३.

३) वही - १६०.

४) संपादक साहनी मिश्र - आधुनिक हिंदी उपन्यास - ११०.

५) प्रो. वासुदेव - हिंदी कहानी और कहानीकार - २४७.

६) कौरिन फ्रेंड - यशपाल, ऑथर एण्ड पैट्रियट - ८.

७) यशपाल - नशे-नशे की बात (दो शब्द)

८) डा. वेदपाल खन्ना - सप्तसिंधु (नवंबर १९४६) - ४४.

९) डा. सुनीलकुमार लवटे - यशपाल : एक समग्र मूल्यांकन - २६२-६३.

द्वितीय अध्याय
हिंदी कहानी यात्रा

` नदी जैसे जलस्त्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह ` रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस परिभाषा के अनुसार यह जीवन और जगत् स्वयं ही एक कहानी है। जब से मनुष्य इस सृष्टि में आया तभी से उसमें कहानी कहने तथा सुनने की प्रवृत्ति भी आयी। इन कहानियों का न तो कोई आदि है और न अन्त ही, यह एक चिरंतन सत्य है। जीवन और जगत् में पल-पल नित नई कहानियाँ बनती चलती जा रही है।

हिन्दी के विद्वानों के अनुसार, आधुनिक कलापूर्ण कहानियों का इतिहास उसके विगत पचास वर्षों का ही इतिहास है। फिर भी प्राचीन कथा साहित्य को हम उपेक्षित नहीं रख सकते। आधुनिक कहानियों की पृष्ठभूमि समझने के लिए प्राचीन कथा साहित्य को जानना आवश्यक है। उसका विभाजन और उसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

प्राचीन काल (सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर सन् ९४५ ई. तक) -

साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो यह काल वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश का है। वैसे देखा जाय तो भारत में कथा साहित्य के विकास का यही प्रथम युग है। वास्तव में उपनिषदों की रूपक कथाओं, महाभारत के उपाख्यानों तथा जातक कथाओं से ही हमारे इस कथा साहित्य का सूत्रपात होता है। इन कहानियों में हमे कल्पना शक्ति का विचित्र प्रयोग देखने को मिलता है।

माध्यमिक काल (पूर्वार्द्ध, सन् ९४५ से १५७२ ई. तक) -

साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो यह काल राजस्थानी और ब्रजभाषा से लेकर हिंदी खड़ी बोली गद्य की सर्वप्रथम रचना गंगकवि कृत `चंद छंद बरनन की महिमा` (सन् १५७२ ई.) तक है। सन् ९४५ ई. से सन् १३४५ ई. तक साहित्यिक क्रियाशीलता का केन्द्र राजस्थान ही था और साहित्य में राजस्थानी भाषा की प्रधानता थी, किंतु उसके अनन्तर ब्रजभाषा ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इन कहानियों का प्रमुख उद्देश्य राजा-महाराजाओं की प्रशंसा करना तथा उपदेश देना ही है। इनमें उस काल के प्रख्यात नरेशों की वीरता, प्रेम, न्याय, विद्या और वैराग्य आदि गुणों का आवश्यकता से अधिक वर्णन किया है। जायसीकृत `पद्मावत,`` कुतुबन कृत `मृगावती` और मंझनकृत `मधुमालती` आदि प्रेमाख्यानों में भारतीय वातावरण के अनुरूप केवल पारलौकिक और विशुध्द प्रेम को ही अपनाया है। लेकिन छबीली भटियारिन, तोता-मैना, गुलबकावली, सारंगा सदावृक्षा, किस्सा साढे तीन चार आदि कहानियों में वासनाजनित भोग और अश्लिल प्रेम का वर्णन मिलता है। अकबर और बीरबल की कहानियों में हास्य और विनोद की परंपरा का एक सुंदर रूप देखने को मिलता है।

माध्यमिक काल (उत्तरार्ध, सन् १५७२ से सन् १९०० ई. तक) -

साहित्यिक दृष्टि से इस काल की विशेषता यही है कि खड़ीबोली को विशेष प्रोत्साहन मिलने के कारण गद्य में रचनाएँ होने लगी। हिंदु संस्कृति का प्रतिपादन करनेवाली कहानियों में गोकुलनाथ द्वारा लिखी गयी ' चौरासी वैष्णवन की वार्ता ' (सन् १५७२) में वैष्णव धर्म के महत्व पर विशेष जोर दिया है। कहानी-साहित्य की इसी परंपरा में जटमल रचित ' गोरा-बादल की कथा ' (सन् १६४६ ई.), लल्लूलाल कृत ' प्रेमसागर ' (सन् १८०३ ई.) सदल मिश्र कृत ' नासिकेतो पाख्यान ' (सन् १८०३ ई.) और इंशाअल्ला खाँ की ' रानी केतकी की कहानी ' का नाम लिया जा सकता है। ' रानी केतकी की कहानी ' में कहानी कला की एक विकसित परंपरा दिखाई देती है।

आधुनिक काल (सन् १९०० से आज तक) -

अ) प्रथम उत्थान (सन् १९०० से १९२५ ई.)

आधुनिक काल में कहानियों का विकास पूर्ण क्रम से हुआ। यह कहानी वैज्ञानिक और आलोचनात्मक युग की ही देन है। प्रारंभ में हिंदी के मासिक और साप्ताहिक पत्रों के द्वारा इसका प्रचार द्विवेदी युग (सन् १९०० से १९२५ ई.) में हुआ। इसमें ' सरस्वती ' और ' सुदर्शन ' नामक पत्र-पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा। मौलिक कहानियों के इस आदिकाल में सर्वप्रथम अनुवादों की ही धूम रही। सन् १९०० से १९१० ई. तक एक प्रकार से प्रयोगात्मक युग ही रहा। इसी काल मे किशोरीलाल गोस्वामी की हिंदी की सर्वप्रथम कहानी ' इन्दुमती ' सरस्वती में प्रकाशित

हुयी । लेकिन इस पर शेक्सपियर के ` टेम्पेस्ट ` (   ) का प्रभाव होने के कारण इसे हम मौलिक कहानी की श्रेणी में नहीं रख सकते । जम्बु की न्याय (१९०६), विश्वनाथ शर्मा की विद्याविहार (१९०९) और मैथिलीशरण गुप्त की ` निन्यानवे का फेर ` (१९१०) आदि कहानियाँ सरस्वती में प्रकाशित हुई । लेकिन इन समस्त कहानियों में उपदेश की मात्रा अधिक है, टेकनीक की कम । ये समस्त कहानी लेखक अनुवादित, रूपांतरित और मौलिक कहानियों के द्वारा हिंदी कथा साहित्य के विकास की यात्रा को आगे बढा रहे थें ।

वृन्दावनलाल वर्मा ने ` राखीबंद माई माई ` (१९०९) और मैथिलीशरण गुप्त ने ` नकली किला ` (१९०९) नामक कहानियाँ लिखी । परंतु इन कहानियों में कोई नवीनता नहीं थी, ये अंग्रेजी प्रेमाख्यान कथाओं से प्रभावित थीं । इस काल की सबसे उल्लेखनीय कहानी बंग महिला की ` दुलाईवाली ` (१९०७) ` सरस्वती ` में छपी । जिसे बहुत-से लोग हिंदी की सर्वप्रथम कहानी मानते हैं । इसके बाद जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी ` ग्राम ` (१९११) और गंगाप्रसाद श्रीवास्तव की प्रथम कहानी ` पिकनिक ` प्रकाशित हुयी । चंद्रधर शर्मा ` गुलेरी ` की प्रथम कहानी ` सुखमय जीवन ` (१९११) लिखी गयी । इसीके साथ मौलिक कहानियों का आरंभ बडी तेजी से प्रारंभ हुआ ।

हिन्दी साहित्य की इन आरंभिक कहानियों में दैवी घटनाओं और संयोगों का ही अधिक प्राबल्य रहा, परंतु आगे चलकर धीरे-धीरे इनमें मानवी जीवन का सफलता के साथ चित्रण होने लगा । इसप्रकार द्विवेदी युग के अंत तक आते-आते आधुनिक कहानी ने अपने पैर अच्छी तरह जमा लिए थें ।

ब) द्वितीय उत्थान - (सन् १९२५ से १९३७ ई.)

द्विवेदी युग में कहानी के कला रूप और उसकी विभिन्न शैलियों का निर्माण हो चुका था, आगे चलकर उसकी धारा बड़े वेग से बहने लगी। इस काल के प्रमुख कहानीकारों ने नई-नई शैलियों को जन्म दिया, जिसके कारण कहानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होने लगा। इस काल के प्रमुख कहानीकारों में चतुरसेन शास्त्री, प्रेमचंद, गुलेरी, प्रसाद, विश्वंभरनाथ, सुदर्शन, गोविंदवल्लभ पंत, ज्वालादत्त शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, वृन्दावनलाल वर्मा, उग्र, रायकृष्ण दास आदि।

क) तृतीय उत्थान (सन् १९३७ ई. से आज तक)

आधुनिक कहानी के इस तृतीय उत्थान में (वर्तमान युग) कहानी लेखकों को अपनी प्रतिभा और बुद्धि का उपयोग करने में जितनी सुविधा और अवकाश मिला, उतना और कभी नहीं। प्रथम उत्थान (द्विवेदी युग) में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के संस्पर्श तथा नवीन आवश्यकताओं के कारण कहानी अपने घटनों के बल चलने लगी। द्वितीय उत्थान (प्रसाद युग) में उसमें अपूर्व शक्ति का संचार हुआ तथा तृतीय उत्थान (वर्तमान युग) में आकर वह स्वच्छंदता के साथ इधर-उधर घूमने लगा। आधुनिक युग में आकर कहानियाँ अत्याधिक लोकप्रिय हुयी और उनका आश्चर्यजनक विकास हुआ।

स्वातंत्र्योत्तर कहानी साहित्य -

राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में पड़ा। हिंदी कहानी साहित्य भी उसके लिए अपवाद नहीं है। इसके फलस्वरूप कहानी के क्षेत्र में एक नूतन युग का सूत्रपात हुआ, जो प्रेमचंद युग से नितांत

भिन्न था और ऐसा होना स्वाभाविक भी था। परिवर्तन के इस दौर में प्रयोगवादियों की अधिक नहीं चली। सामाजिक विषमता, निराशा, अवसाद एवं असंतोष की अभिव्यक्ति के साथ-साथ मानववादी भावना, देश-प्रेम एवं हिंदी प्रेम की भावना को भी बल मिला। आज का हिंदी कहानी साहित्य इतनी विविध धाराओं में बह रहा है कि यह उसकी प्रगति का प्रतीक दिखाई देता है।

इस प्रकार हिंदी कहानी का विकास निरंतर होता आ रहा है और उसकी धारा आगे और भी बलवती रहेगी ऐसा हमें विश्वास है। इस प्रवाह को आगे बढाने में जिन कहानीकारों ने अपना योगदान दिया उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य के क्षेत्र में कहानी का भी अविर्भाव भारतेंदु युग में ही हुआ। इस युग में गद्य साहित्यांग की और लेखकों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। मुख्यत: सामाजिक प्रवृत्ति से संबंधित कहानियाँ ही इस युग के अधिकांश लेखकों ने प्रस्तुत की।

<u>भारतेंदु हरिश्चंद्र</u> -

आधुनिक युग के प्रवर्तक के रूप में उन्होंने कहानी साहित्य का भी प्रवर्तन किया। कहानी साहित्य के क्षेत्र में उनकी लिखी हुई एक रचना ` एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती ` प्रमुख है। कथावस्तु तथा भाषाशैली की दृष्टि से इस कहानी का महत्व है। व्यावहारिक भाषा में यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत की गयी है। इसमें लेखक ने समकालीन सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि में मानव मनोवृत्ति का विश्लेषण किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र की ही लिखी हुई एक अन्य गद्य रचना

` एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न ` का भी उल्लेख किया जाता है । यह निर्णयात्मक रचना है । वह कथातत्वों से युक्त है ।

राधाचरण गोस्वामी -

इन्होंने ` यमपुर की यात्रा ` नामक एक कल्पना प्रधान कहानी प्रस्तुत की है । इस कहानी में लेखक ने यह संकेत किया है कि समाज के विभिन्न वर्ग मूलत: मिथ्या भावनाओं एवं रूढ़िवादी मान्यताओं में आस्था रखते हैं । इस कहानी की शैली नाटकीय है और लेखक ने इसमें सांकेतिक रूप से सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिकता से संबंधित अनेक संकेत प्रस्तुत किये हैं ।

किशोरीलाल गोस्वामी -

इनकी एक मात्र कहानी ` इंदुमती ` शीर्षक से उपलब्ध होती है । यह एक कल्पित कहानी है । इसमें यथार्थपरक दृष्टिकोण अथवा समाज-सुधार की भावना का अभाव है । यह कहानी एक कल्पनापूर्ण प्रेमकथा है । इसमें इतिहास और कल्पना का अद्भुत सम्मिश्रण दिखाई देता है, जो भारतेंदु युगीन कहानी साहित्य की प्रमुख विशेषता रही है ।

रामचंद्र शुक्ल -

कहानी साहित्य के क्षेत्र में उनकी एकमात्र रचना ` ग्यारह वर्ष का समय ` शीर्षक से उपलब्ध होती है । यह कहानी कल्पनात्मक तत्वों पर आधारित है । इस कहानी में लेखक ने ग्यारह वर्ष के अंतराल से दो प्रेमी हृदयों का मिलन दिखलाया है । नारी-जीवन से संबंधित लेखक का आदर्शपरक दृष्टिकोण इस कहानी में संकेत रूप में चित्रित हुआ है ।

गिरिजादत्त वाजपेयी -

इनकी प्रसिध्द कहानियों में ` पति का पवित्र प्रेम ` तथा ` पंडित और पंडितानी ` आदि हैं । इन दोनों कहानियों में यथार्थ के स्थान पर कल्पनात्मकता का ही आधिक्य है ।

बंग महिला -

हिन्दी कहानी के विकास के इस प्रारंभिक युग में बंगमहिला का नाम उल्लेखनीय है । ` कुंभ में छोटी बहू,`` दान-प्रतिदान,`` दुलाईवाली` आदि कहानियों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं । बंगमहिला की कहानियो की प्रमुख विशेषता सामाजिक पारिवारिक, विश्वसनीय वर्णनात्मकता और मनोवैज्ञानिकता है । कल्पनात्मक तत्वों की प्रधानता होते हुए भी उनमें मानवीय संवेदना का जो चित्रण मिलता है वह उनकी रचनाओं को कलात्मकता प्रदान करता है ।

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री -

कहानी के क्षेत्र में उनकी एक रचना ` सच्चाई का शिखर ` शीर्षक से उपलब्ध होती है । यह कहानी भी युगीन प्रवृत्तियों से साम्य रखती है और इसमें भी कल्पनात्मक तत्वों की ही प्रधानता है ।

प्रेमचंद -

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार प्रेमचंद ने अपनी कहानियों से हिंदी साहित्य में एक नवीन क्रांति का पथ प्रशस्त किया । हिंदी संसार में आपकी कहानियाँ जितनी लोकप्रिय हुई उतनी और किसी लेखक की नहीं ।

आपकी उर्दू कहानियों का संग्रह ` सोजे वतन ` अंग्रेज सरकार ने जब्त किया था। उर्दू से हिंदी में आकर प्रेमचंद ने हिंदी कहानी साहित्य को लगभग तीन सौ कहानियाँ दी हैं। प्रेमचंद की जीवनी स्वयं एक कहानी है और तत्कालीन गतिविधियाँ उसकी प्रमुख घटनाएँ हैं। इसीकारण प्रेमचंद एक मानवतावादी कहानीकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने सर्वप्रथम हिंदी कहानियों को बाह्य घटनाओं से मुक्त करके उनमें आंतरिक भावनाओं का चित्रण किया। मानव-जीवन के अन्त: रहस्यों के उद्घाटन द्वारा समाज की प्रत्येक समस्या को अपनी कहानी का विषय बनाया। विषय की व्यापकता, चरित्र-चित्रण की सूक्ष्मतम विचार एवं भाव गंभीरता, प्रवाहपूर्ण सुबोध शैली एवं लोक संग्रह की भावना से प्रेमचंद की कहानियाँ अद्वितीय बन पडी हैं।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को उठाते हुए वर्ग वैषम्य एवं विकृत रूढियों का तीव्र विरोध किया है। उनका आदर्शवादी दृष्टिकोण लगभग सभी कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसी कारण उन्हें आदर्शोन्मुख यथार्थवादी लेखक कहा जाता है। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद ने गांधीवादी आदर्शों की व्यावहारिक परिणति प्रस्तुत की है। अपनी कहानियों में उन्होंने नारी जीवन के विविध पहलूओं को और समस्याओं को बडी सहृदयता के साथ चित्रित किया है। उनका मत है कि सेवा और त्याग का आदर्श ही नारी जीवन का उन्नयन कर सकता है।

<u>सुदर्शन</u> -

प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी साहित्य में जिन-जिन लेखकों का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है उनमें बदरीनाथ (सुदर्शन) का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है। आप हर क्षेत्र में प्रेमचंद के ही अनुयायी है।

उर्दू क्षेत्र से हिंदी में आकर आपने सन् १९२० ई. से कहानियाँ लिखना आरंभ किया। अंग्रेजी साहित्य का अच्छा ज्ञान होने के कारण आपकी कहानियों की टेकनीक विशेष ढंग की है। `सुदर्शन-सुधा,` `तीर्थयात्रा,` `सुप्रभात,`` पनघट,`` प्रमोद,`` नगीने,`` नवनिधि,`` चार कहानियाँ` आदि आपके कहानी-संग्रह इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं। आपकी कहानियों के विषय अधिकांशत: सामाजिक ही है। सुदर्शन की कहानियाँ बड़े शांत और गंभीर स्वभाव के साथ उत्तरोत्तर अग्रसर होती हैं। आप आर्य समाजी होने के कारण सुधारक की प्रवृत्ति कहानियों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। आधुनिक कहानियों में विकास की एक सुंदर कड़ी सुदर्शन की वातावरण-प्रधान कहानियों के द्वारा निर्मित है। इनका मुख्य उद्देश्य मानव चरित्र के सूक्ष्म अन्त: रहस्यों का उद्घाटन करना है। `सुप्रभात` की समस्त कहानियाँ राजनीतिक आंदोलनों और सामयिक भावनाओं को समझाने में सहायता करती है।

चंद्रधर शर्मा `गुलेरी` -

गुलेरी जी अपने युग के श्रेष्ठ विद्वान तथा देशी-विदेशी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्हें अनेक भाषाओं के साथ अनेक विषयों का भी अच्छा ज्ञान था। किंतु हिंदी साहित्य में उनका केवल कहानीकार के रूप में ही परिचय मिलता है। हिंदी कहानी जगत् को गुलेरी जी ने केवल तीन कहानियाँ `सुखमय जीवन,`` बुध्दू का काँटा` और `उसने कहा था` समर्पित की हैं। किंतु इन तीन कहानियों के कारण ही आप हिंदी कहानी संसार में अमर हो गए। कहानीशिल्प का बहुत ही अद्भुत मिश्रण आपकी कहानियों में मिलता है। आपने कहानी के समस्त तत्वों को संतुलित करते हुए बड़ी आकर्षक शैली का सृजन किया। कहानी में

वातावरण सृजन कैसे किया जाता है, कथोपकथन रसमय एवं प्रभावोत्पादक कैसे हो सकते हैं, कथ्य किसप्रकार का होना चाहिए, आदि बातें गुलेरी जी की कहानियों में आदर्श रूप में देखी जा सकती हैं। गुलेरी जी की ` उसने कहा था ` कहानी में जीवन की अनुभूति है, न कहीं इतिवृत्तात्मकता है न उपदेशात्मकता। प्रेम और कर्तव्य के समन्वित चित्रण में उनको ऐसी अद्वितीय सफलता मिली है कि, आज भी उनकी इसी एक कहानी की तुलना में दूसरी कोई कहानी टिक नहीं सकती।

<u>जयशंकर प्रसाद</u> -

आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य के निर्माताओं में अपने ढंग की विशेष कहानियाँ लिखनेवालों मे जयशंकर प्रसाद का नाम ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से सर्वप्रथम आता है। अपने जीवन-काल में प्रसाद ने ६९ कहानियाँ लिखीं। आपके पाँच कहानीसंग्रह ` छाया,`` प्रतिध्वनि,` ` आकाश-दीप,`` आँधी,`` इंद्रजाल ` प्रकाशित हो चुके हैं। ` ग्राम ` से लेकर ` सालवती ` तक उनकी विचारधारा का क्रमिक विकास हमें देखने को मिलता है। प्रसाद की अधिकांश कहानियाँ भाव-प्रधान हैं जिनमें कल्पना और भावना की प्रधानता रहती है। इनका सीधा संबंध लेखक के हृदय से है, मस्तिष्क से नहीं। इसीलिए प्रसाद की कहानियों में विचारों की प्रधानता न होकर किसी भाव-विशेष पर ही विशेष बल दिया गया है। प्रसाद राष्ट्र तथा समाज की अपेक्षा मानवता के उद्बोधक के रूप में हमारे सामने आते है। रहस्यवादी कवि होने के नाते प्रसाद की कुछ कहानियाँ भी रहस्य-प्रधान हो गयी हैं। कवित्वपूर्ण वातावरण, कवित्वपूर्ण भावना और नाटकीय तथा आदर्शवादी परिस्थितियों की सृष्टि करने में प्रसाद निःसंदेह बेजोड है। प्रसाद की कला इन कहानियों में आकर पूर्ण रूप से कवित्वपूर्ण और स्वच्छंदतावादी बन गयी है। इसका

कारण है, प्रसाद पहले कवि थे, बाद में कहानीकार ।

विश्वंभरनाथ शर्मा ` कौशिक ` -

हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में प्रेमचंद के समान कौशिक का स्थान भी महत्वपूर्ण है । उन्होंने सन् १९१३ म ई.से लिखना आरंभ किया और केवल अल्प समय में ही विशेष ख्याति प्राप्त कर ली । हिंदी साहित्य को आपने लगभग तीन सौ कहानियाँ प्रदान की हैं, जिनमें ` चित्रशाला (३ भाग), ` गल्प-मंदिर,`` प्रेम-प्रतिमा,`` मणिमाला` और ` कल्लोल ` आदिक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । ` कौशिक ` ने कथानक प्रधान कहानियों के निर्माण में ही अपनी सृजन प्रेरणा का परिचय दिया है, जिनकी श्रेणी कलात्मक कहानियों के बीच साधारण मानी जाती है । मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश भी उनकी कहानियों में मिलता है ।

पाण्डेय बेचन शर्मा ` उग्र ` -

श्री बेचन शर्मा ` उग्र ` अपनी लेखनी की उग्रता के कारण हिंदी कहानी के क्षेत्र में विवाद का विषय रहे हैं । स्वभाव से मस्त तथा अक्खड होने के कारण आप स्कूल के बंधनों में भी ज्यादा दिन रह नहीं सके । सन् १९२१ में असहयोग आंदोलन में आपने स्कूली शिक्षा छोड दी । हिंदी साहित्य में भाव, भाषा तथा शैली की दृष्टि से आपने सर्वत्र निराले रूप में आकर अपना ` उग्र ` होना सार्थक कर दिखाया । आपने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, कविता आदि पर सफलतापूर्वक लेखनी चलायी । उग्र जी समाज में व्याप्त विषमता, भ्रष्टाचार से अत्यधिक क्षुब्ध थे । वे समाज में संपूर्ण परिवर्तन चाहते थे । अपनी लेखनी द्वारा वे

समाज के यथार्थ रूप को बेझिझक, फिर भी कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करते है। आपके कला की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है आपकी तीव्र संवेदनशीलता। तीव्र भावुकता ने आपको लिखने के लिए प्रेरित किया। आपकी कहानियों में राष्ट्रप्रेम की भावना भी भरी हुयी है। ` उग्र ` जी के प्रमुख कहानी संग्रह इसप्रकार हैं - १) चिनगारियाँ, २) इंद्रधनुष्य, ३) निर्लज्य, ४) रेशमी, ५) दोजख की आग, ६) बलात्कार, ७) जब सारा आलम सोता है, ८) सनकी अमीर, ९) कालकोठरी, १०) चित्र-विचित्र, ११) मुक्ता, १२) यह कंचन सी काया।

आ. चतुरसेन शास्त्री -

आ. चतुरसेन शास्त्रीजी ने सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर कहानियाँ लिखी हैं। उनके प्रसिध्द कहानी संग्रह - ` बाहर भीतर,`` दुखवा मैं कासे कहूँ,` धरती और आसमान,` ` सोया हुआ शहर ` तथा ` कहानी खत्म हो गयी ` आदि हैं। शास्त्रीजी का यथार्थ मूल्यांकन उनकी ऐतिहासिक कहानियों के द्वारा किया जा सकता है। यहाँ उन्होंने कमाल कर दिखाया है। कल्पित आदर्श का सन्निवेश करके वे पाश्चात्य कहानियों की रीति को हिंदी में सर्वप्रथम लाये है। आ. शास्त्री की महत्ता इसी बात में है कि वे छोटी-से-छोटी सामाजिक तथा ऐतिहासिक घटना को, चाहे वह कैसी ही क्यों न हो, आकर्षक तथा मनोरंजक बना देते हैं।

जैनेंद्रकुमार -

जैनेंद्रकुमार जी हिंदी के प्रसिध्द कहानीकार, उपन्यासकार, निबंध-लेखक और चिंतक है। जीवन के विशिष्ट क्षणों को पकड़कर उनका

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में आप पटु है। प्रेमचंद जी के बाद हिंदी कथा साहित्य को नयी दिशा दिलाने में आप अग्रसर रहे। जैनेंद्र जी ने ३०० से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में विभिन्न विषयों को आपने अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाविधी अंग्रेजी से प्रभावित लगती है। जैनेंद्र गांधीवादी आंदोलन के सक्रिय सिपाही रहे है। उन्होंने म.गांधी के आवाहन पर अपनी पढाई छोडकर आंदोलन में भाग लिया। जैनेंद्र एक एकान्तिक, भावुक और कल्पनाजीवी लेखक है। अध्ययन की अपेक्षा उनका चिंतनशील होना अधिक स्पष्ट होता है। इसी चिंतनशीलता का परिचय उनके कथा साहित्य में मिलता है। इस दृष्टिकोण से उनकी संपूर्ण कहानियाँ को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है, पहले भाग में उनकी प्रारंभिक कहानियाँ हैं, जिनपर दार्शनिकता का गहरा रंग है, तथा दूसरे भाग में उनकी मनोवैज्ञानिक कहानियाँ आती हैं। जैनेंद्र की कहानियों में कहानीकला का सर्वोत्कृष्ट रूप मिलता है। हिंदी के मौलिक और प्रभावशाली कलाकार के रूप में जैनेंद्र का स्थान निर्विवाद है। मनोवैज्ञानिकता जैनेंद्र की कहानियों की प्रमुख पहचान है। इसी के प्रगाढ संस्पर्श से उनकी कहानियाँ चरित्र केंद्रीत हो गयी हैं।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी -

इस युग के कहानी लेखकों में वाजपेयी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ मनोविश्लेषणात्मक तत्वों का भी समावेश दिखाइ देता है। उनके साहित्यिक दृष्टिकोण में मानवतावाद की प्रधानता है जो आदर्शवाद पर आधारित है। मध्यमवर्गीय नैतिक भावना, नारी जीवन तथा उसकी समस्याओं का चित्रण भी उनकी कहानियों में मिलता है। उनकी कहानियों के चित्रों में सजीवता और स्वाभाविकता अधिक रहती है। वे जिस वस्तु को वर्णन करते है, उसकी जी जीती-जागती तस्वीर हमारे सामने उपस्थित हो जाती है। भावुकता की

दृष्टि से वाजपेयी प्रसाद के पास दिखाई देते है और असाधारण स्थितियों में पात्रों के चुनाव में वे जैनेंद्र को स्पर्श करते हुए दिखाई देते है । इसप्रकार भगवतीप्रसाद वाजपेयी एक ऐसे मध्यस्तरीय लेखक ह के रूप में प्रतिष्ठित है, जिसने अपने युग की महत्वपूर्ण शैलियों को सार्थकता के साथ आत्मसात कर लिया है ।

भगवतीचरण वर्मा -

वर्मा जी ने अपनी कहानियों में समाज में व्याप्त रूढिवादी भावनाओं और मिथ्या अहं भावना का चित्रण करते हुए उसे समाज के स्वस्थ विकास के लिए घातक बताया है । ` इन्स्टालमेंट,`` दो बांके,`` राख और चिनगारी` तथा ` खिलते फूल ` आदि उनके प्रतिनिधि कहानी संग्रह हैं । आर्थिक वैषम्य और प्रगतीशील चेतना की परस्पर संबध्दता ने भगवतीचरण वर्मा को देश की आर्थिक व्यवस्था पर भी व्यंग्य करने के लिए विवश किया । युग की जटिल समस्याओं तथा एक मुठ्ठी अन्न के लिए तड़पते हुए, लोगों की जुबान के हर शब्द को उन्होंने स्याही बनाकर लिखने की चेष्टा की है । वर्मा जी की कहानियों में सामाजिक और नैतिक मान्यताओं के प्रति एक प्रकार के विद्रोह की भावना दिखाई देती है । निर्धनता और आर्थिक वैषम्य को वर्मा जी ने आधुनिक भारतीय समाज का सबसे बड़ा अभिशाप बताया है । हास्य और व्यंग्य का पुट देकर मानव जीवन के चिरंतन सत्यों का उद्घाटन जितना सुंदर वर्मा जी ने अपनी कहानियों में किया हैं, उतना सुंदर हिंदी के और किसी कहानीकार ने नहीं किया । वर्मा जी अपने क्षेत्र में अद्वितीय है ।

अज्ञेय -

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन ` अज्ञेय ` की अधिकांश कहानियाँ प्रभावप्रधान कहानियों के अंतर्गत् आती हैं । ` विपथगा,` ` परंपरा,`` कोठरी की बात` तथा ` जयदोल ` आदि आपके कलापूर्ण संग्रह हैं । राष्ट्रीय आंदोलन, क्रांतिकारिता, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व एवं कुंठाएँ, मनोविज्ञान आदि विषय उनकी कहानियों में मिलते हैं । आपकी कुछ कहानियाँ गद्य-काव्य की शैली पर होती है, जिन्हें हम भाव प्रधान या वातावरण प्रधान कहानियाँ कहते हैं । अज्ञेय जी ने अपनी अधिकांश कहानियाँ निम्नवर्ग और मध्यवर्ग के लोगों को लेकर लिखी हैं । कहानी की आत्मा और शैली दोनों की दृष्टि से आप एक उत्कृष्ट कहानीकार कहे जा सकते हैं । मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में ` अज्ञेय ` ने विशेष चातुरी से काम लिया है । अज्ञेय का महत्व मानव मन की गहराईयों में झांकने और वहाँ की गतिविधियों और अनुभूतियों को सशक्त ढंग से व्यक्त करने की दृष्टि से है । देश-विभाजन से जुडी कहानियों में मनोविज्ञान और तात्कालिकता का जो तालमेल हुआ है, वह भी सार्थक है ।

उपेंद्रनाथ अश्क -

उपेंद्रनाथ अश्क उर्दू क्षेत्र से हिंदी की ओर आये है, इसीलिए आपकी कहानियाँ प्रेमचंद और सुदर्शन की शैली की हैं । अश्क एक प्रगतिशील लेखक है । इसीकारण आपकी कहानियाँ यथार्थवाद के समीप हैं । लेकिन यथार्थवाद को अश्क ने संतुलित सामाजिक उद्देश्य की हद तक ही स्वीकार किया है । इनकी कहानियों की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि उनमें विभिन्न वर्गीय, सामाजिक यथार्थ के प्रति व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण मिलता है । उनके अधिकांश पात्र मानवता की आधारभूमि पर चित्रित

किये गये हैं। अश्क की कहानियों में समाज की आलोचना, व्यक्ति के मानसिक संघर्ष का चित्रण और परिस्थिति तथा यथार्थ का अंकन मिलता है।

इलाचंद्र जोशी -

इलाचंद्र जोशी ने उपन्यासों की तरह कहानियाँ भी बहुत लिखी हैं। ` रोमांटिक और छाया,`` आहुती,`` दीवाली और होली,` ` ऐतिहासिक कथाएँ ` आदि आपके कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी कहानियों में मुख्य रूप से मध्यवर्गीय समाज की ऱ्हासोन्मुखी वृत्तियों का चित्रण मिलता है। मनुष्य के अहं, कुंठाओं और मानसिक विकृतियों से संबंधित तत्वों की व्यावहारिक विवृत्ति भी उनकी कहानियों में मिलती हैं। जोशी जी की कहानियों में मनोविश्लेषण - शास्त्र की पध्दतियों का अधिक उपयोग किया गया है। स्त्री-पुरूषों के संबंधों पर लिखी गयी कहानियों में जोशी जी नैतिक आत्मपीडा और अपराध भावना की ही अभिव्यक्ति कर सके है।

यशपाल -

यशपाल को हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के उत्तराधिकारी के रूप में देखा और समझा जाता है। ` कथ्य ` और ` शिल्प ` दोनों दृष्टियों से यशपाल प्रेमचंद के बहुत पास ठहरते है। ....भाषा और शैली की दृष्टि से ऐसा जान पडता है कि, मानो प्रेमचंद ही नये युग में नया शरीर धारण कर पुन: सजीव हो गये हो। बहुत से कहानीकारों ने उनकी कहानीकला को आदर्श बनाया है। आज भी प्रगतिशील कहानीकारों के लिए उनकी उचनाएँ एक आदर्श का काम करती हैं। विराट

अनुभव, स्पष्ट वैचारिकता, सहजभाषा और आत्मीय कथन पध्दत से युक्त उनकी कहानियाँ अपने युग के इतिहास को लिपिबध्द करने के साथ-साथ समाजव्यापी मूल्य विघटन और मूल्य संक्रमण को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत कर सकी है। हिंदी कहानी के अतीत को जानने के लिए चार मास्टर राइटर्स को बार-बार जानने की आवश्यकता रहेगी, इन चारों में प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेंद्र के साथ यशपाल भी है। यशपाल मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित कहानीकार है। इनकी कहानियों में प्रमुख रूप से यथार्थवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है और उनमें समाज की कुरीतियों की कटु आलोचना की गयी है। यशपाल स्वतंत्रता आंदोलन के सजग सेनानी होने के कारण उनकी अनेक कहानियों में क्रांतिका का चित्रण हुआ है। यशपाल ने हिंदी कहानी के विकास में योगदान दिया है। उन्होंने स्वयं प्रेमचंद की परंपरा में अपना महत्व स्वीकार करते हुए कहा है कि, उनमें और प्रेमचंद में जो अंतर है वह समय के परिवर्तन के कारण बदलनेवाले मूल्यों का परिणाम है। प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी को यथार्थबोध या वस्तुज्ञान का परिप्रेक्ष्य देनेवाले लेखकों में यशपाल अन्यतम है। वे विचारों के लेखक है इसलिए रूप की चिंता को गौण मानकर वे कहानी को भी जीवन की समस्याओं के अध्ययन का माध्यम स्वीकारते है। कहानी उनके लिए केवल साहित्यिक विधा नहीं है, बल्कि एक सजीव सामाजिक वस्तु है - जीवन के प्रति एक सक्रिय आलोचनात्मक दृष्टि है। यथार्थ के प्रति यशपाल की मर्मभेदी दृष्टि कहानी को निश्चित प्रयोजनीयता की ओर ले जाती है। यशपाल अपनी कहानियों में सामाजिक व्यवस्था के बहुस्तरीय संबंधों की जाँच करते है और उन रूढियों पर प्रहार करते है जो मनुष्य को नैतिक अवमूल्यन तक ले जाती है। मानव समाज की विकृतियों को स्पष्ट करते हुए यशपाल ने मानव सत्य की स्थापना करना चाहा है। धर्म, अर्थ, काम आदि साहित्य के

सभी विषयों पर आधारित उनकी कहानियाँ प्रेमचंद की विरासत से भिन्न आधुनिकता के परिवेश में चित्रित हैं। यशपाल की दृष्टि यदि व्यापक और स्थूल समस्याओं का चित्रण करने में रममाण हुयी है, तो वह सूक्ष्म-से सूक्ष्म मानव वृत्तियों का उद्घाटन करने में भी कुशल है।

मोहन राकेश -

मोहन राकेश जी आधुनिक लेखकों में एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व है। आप एक श्रेष्ठ नाटककार थे। राकेश जी ने कहानियों के अतिरिक्त उपन्यास भी लिखे हैं। आपकी कहानियों में मध्यमवर्गीय जीवन की विभिन्न समस्याओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्राप्त होता है। आप व्यक्ति के मानसिक संघर्ष का गहराई और सूक्ष्मता केसाथ चित्रण करने में कुशल है। अपने कथन के प्रभाव के लिए आप यथार्थ परिस्थिति का मार्मिक वातावरण खडा करत देते है। भावानुकूल और विषयानुकूल सरल और प्रभावशाली भाषा के प्रयोग में आपको अपूर्व सफलता प्राप्त है। मोहन राकेश का नाम ` नई कहानी ` के प्रवर्तकों में सर्वप्रथम आता है। साठोत्तरी पीढी की मन:स्थितियों का जैसा सूक्ष्म एवं जीवित चित्रण आपने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। आपकी कहानियों में सामाजिक चेतना, मानव के प्रति आस्था, जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा आदि विशेषताएँ मिलती हैं। मोहन राकेश के प्रसिध्द कहानी संग्रह हैं - ` इन्सान के खंडहर,`` नये बादल,`` जानवर और जानवर,`` एक और जिंदगी,` ` फौलाद का आकाश,`` एक दुनिया ` और ` मिले जुले चेहरे ` आदि।

कमलेश्वर -

आधुनिक कथाकारों में कमलेश्वर जी का स्थान बहुत ऊँचे दर्जे का है। हिंदी कहानी को नयी दृष्टि देने और उसे सामायिक जीवन से जोडने का सफल कार्य आपने किया है। कमलेश्वर जी कहानीकार के अलावा

उपन्यासकार और समीक्षक के नाते भी प्रसिध्द है । ` सारिका ` नामक मासिक पत्रिका के आप संपादक रह चुके है । हमारे आज के बदलते हुए समाज-जीवन और गृहस्थ-जीवन की मार्मिक पकड आपके लेखन की प्रमुख विशेषता है । कमलेश्वर जी व्यक्ति में फैले अंतर्द्वन्द्व के माध्यम से पूरे युग के संघर्ष को चित्रित करने में सफल हुए है । आपकी भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट तथा दृष्टि प्रगतिशील है । मानव-नियति की भयानकता को चित्रित करते रहने पर भी आपके लेखन में जीवन के प्रति आकर्षण स्पष्ट होता है ।

कमलेश्वर की कहानियों का नायक आज का अनुभूतिशील एवं संवेदनशील युवक है, जो अपने व्यक्तित्व की परिधि में गहराई से डूब कर सामाजिक संवेदनाओं को वाणी देता है । उसके टूटने और बनने दोनों के स्वरों को यथावत् प्रस्तुत कर देनेवाली भाषा कमलेश्वर की है जो उन्हें आधुनिक कहानीकारों में एक विशिष्ट स्थान दिलाती है । आपके अभी तक दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, ` राजा निरबंसिया ` और ` खोयी हुई दिशाएँ ` । इसके अतिरिक्त आपके नाटक और उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं ।

मन्नू भंडारी -

मन्नू भंडारी जी वर्तमान स्त्री-कथा लेखिकाओं में विशेष प्रसिध्द है । आप कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में प्रसिध्द है । नारी जीवन की समस्याओं को प्रत्यक्ष जीवन के बीच से उठाकर चित्रित करने, उनकी मानसिक स्थिति का सूक्ष्म विश्लेषण करने तथा युगीन समाज-यथार्थ को चित्रित करने में आपकी कलम विशेष सफल सिध्द हुई है । जीवन के विविध प्रसंगों को चुनकर आपने अनुभव क्षेत्र के विस्तार को सिध्द किया है ।

आप व्यक्ति-चरित्र को उसके स्वाभाविक मानसिक एवं सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों मे चित्रित करती है। भाषा में सरलता, स्पष्टता, व्यावहारिकता के साथ व्यंग्य का पुट भी है। आपने कई गंभीर कहानियाँ भी लिखी हैं। आपकी कहानियों में पात्रों के मनोविश्लेषण के साथ-साथ भावना का आवेग बडा तीव्र रहता है। जिसका उपचार आप नहीं कर पाती। आपने नारी के अन्तर्जगत का खुलकर चित्रण किया है। आपकी कहानियों के अधिकांश पात्र रुग्ण, पीडित, अतीत सेवी या एकांत प्रिय होते हैं। इसीलिए आपकी कहानियों में घुटनभरा तथा विषादपूर्ण वातावरण मिलता है। वातावरण सृजन में आप कमाल करती है। नये कहानीकारों में आपका स्थान विशिष्ट है।

स्त्री-पुरुष के काम संबंधों पर आधारित कहानियों में पत्तो और रेशों को बहुत सलीके से अलगाते हुए मर्म तक पहुँचने का जो प्रयास मन्नू भंडारी ने किया है, वह किसी भी समर्थ कहानीकार के लिए ईर्ष्या की वस्तु हो सकता है। उनकी कहानियों में स्वप्न विश्लेषण, पूर्वदीप्ति, फैंटेसी आदि आधुनिक शिल्प विधियों का प्रयोग दिखायी देता है। परंतु मन्नू भंडारी की यह विशेषता रही कि उनकी कहानियों में किसी भी प्रकार की जटिलता और उलझाव प्राय: नहीं है। इसीलिए सामान्य पाठक इन में रमता है।

<u>निर्मल वर्मा</u> -

नयी कहानी के दौरान उभरे कहानीकारों में निर्मल वर्मा संभवत: सर्वाधिक विवादास्पद रहे है। इनके बारे में आलोचकों में काफी मतभेद हैं। निर्मल वर्मा की अधिकतर कहानियों की जमीन संकुचित और एक आयामी है। उनकी कहानियों में अकेलापन भोगने के लिए अभिशप्त

चरित्रों की मानसिकता प्राय: मुखर है । ये चरित्र या तो प्रवासी भारतीय है या अपने ही देश में निर्वासित या आत्मनिर्वासित व्यक्ति हैं । अत: यह अस्वाभाविक नहीं है कि, निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलापन एक अभिशाप या आतंक बनकर व्यक्त हुआ है । हालांकि, निर्मल वर्मा की कहानियों में बंद कमरे की एकान्तिकता नहीं है, लेकिन पार्क, हिल स्टेशन, रेस्तरा, बार, होटल आदि की मौजुदगी में भी समाज का एक छोटासा टुकडा ही इन कहानियों में उभरता है ।

<u>भीष्म सहानी</u> -

भीष्म सहानी के कहानी लेखक का आरंभ प्रेमचंद द्वारा संपादित ` हंस ` में प्रकाशित ` नीली आँखें ` से हुआ था । लेकिन वेपहले ` चीफ की दावत ` कहानी से जाने गये । अब तक उनके ७-८ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं । उनकी शुरू की कहानियों में घटना बहुलता और संबंधों के संक्रमण की पहचान मुखर है । कालांतर में मानसिकता का विश्लेषण मुख्य होता गया । हिंदी के जिन कहानीकारों ने प्रेमचंद को आत्मसात करते हुए उनकी जनधर्मी परंपरा को विकसित किया है, नयापन दिया है, उसमें भीष्म सहानी अलग से इसलिए पहचाने जाते है कि उनकी कहानियों का मुहावरा प्रयोगधर्मी या चौंकानेवाला न होकर बहुत सहज और आत्मीय है । ` चीफ की दावत ` से लेकर ` खुशबू ` तक की कहानी यात्रा में भीष्म सहानी ने मानवीय संबंधों की पहचान और परिवेश-बोध को आंकने में अपनी रचनात्मक सामर्थ्य का पूरा-पूरा उपयोग किया है ।

<u>राजेंद्र यादव</u> -

नयी कहानी के दौर में जिन कहानीकारों ने समूचे परिप्रेक्ष्य को गैर रोमैन्टिक नजरिए से देखा, उनमें राजेंद्र यादव उल्लेखनीय है ।

उनकी कहानियों की जमीन संकुचित नहीं है। कभी-कभी वे मध्यवर्गीय काम-संबंधों की दुनिया से अलग होकर भी कहानियाँ लिखते है। जहाँ तक ` तकनीक ` का प्रश्न है, अधिकतर कहानियाँ किसी पात्र के चिंतन मनन से शुरू होती है और पिछली घटनाएँ उस सोच के आस-पास उसी तरह तैरती निकलती रहती है, जैसे गीत के आस-पास पार्श्वसंगीत। अब तक राजेंद्र यादव के १० कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

विवेकीराय -

विवेकीराय १९४५ से आजतक बराबर लिखते रहे है। अब तक आपके पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कहानियाँ तीन प्रकार की है। अधिक संख्या उन कहानियों की है जो स्वतंत्रता के बाद के ग्रामीण जीवन के बदलाव को विशेषत: मूल्य संक्रमण को निकट से देखने की गवाह देती हैं। दूसरे प्रकार की कहानियाँ वे हैं जहाँ विवेकीराय बाह्य परिदृश्य से कुछ हटकर मन की गहराइयों में धंसते है। इसप्रकार की कहानियाँ आम तौर पर चरित्र विशेष पर केन्द्रीत कहानियाँ हैं। तीसरे प्रकार की कहानियाँ वे हैं, जिनमें किसी विशेष क्षण या कुछ क्षणों की अनुभूतियाँ उभरी हैं। ये कहानियाँ कहानी कम, ललित निबंध अधिक जान पडती है। विवेकीराय की मानवतावादी विचारधारा ने कहानियों को संयत सन्तुलित विचारशीलता से युक्त किया है।

महीपसिंह -

महीपसिंह को सचेतन कहानी के प्रस्तुतकर्ता के रूप में जाना जाता है। आज तक उनके पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। अपनी तीन दशक से कुछ अधिक की ` कहानी यात्रा ` में महीपसिंह ने एक सार्थक कहानीकार

होने का प्रमाण दिया है। मुख्यत: नगरीय-महानगरीय संदर्भों को उभारते हुए वे यथार्थ की सही पहचान और अभिव्यक्ति अपने विशिष्ट अंदाज में कर सकते हैं। महीपसिंह केवल स्थितियों की भयावहता के चित्रण तक सीमित नहीं रहते, उनसे जूझने के संदर्भ भी उनकी कहानियों में हैं। उनकी अधिकतर कहानियाँ यौन संबंधों पर केन्द्रीत हैं। लेकिन ये अकहानी के यौन संसार के विपरीत एक सामाजिक संदर्भ लिए हुए है तथा इनमें जीवन अनुभवों का वैविध्य हैं।

हेतु भारद्वाज -

हेतु भारद्वाज न केवल कहानीकार है अपितु एक समर्थ समीक्षक भी है। अत: उनकी आलोचनात्मक कृतियों और टिप्पणियों से उनकी कहानी संबंधी समझ का परिचय भली-भाँति मिलता है। अब तक उनके पाँच कहानीसंग्रह प्रकाशित हुए हैं। ' तीन कमरों का मकान ' की कहानियाँ निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार की समस्याओं से संबंधित हैं। ' तीर्थयात्रा ' संग्रह की नौ कहानियाँ भी समयगत सच्चाई से जुड़ी हुए हैं। इन कहानियों में एक ओर धार्मिक अंध:विश्वासों की कटु आलोचना है तो दूसरी ओर गाँव में बढ रही नीचता, आपसी फुट और स्वाधीनता को लेकर लेखकीय चिंता व्यक्त हुयी है। हेतु भारद्वाज की कहानियों को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि वर्गों में नहीं बाँटा जा सकता क्यों कि वे यथार्थ को उसकी संश्लिष्ट रूप में रचना का आधार बनाते है। प्रेमचंद ने भाषा का जो मानक रूप स्थिर किया था, उसीका विकसित रूप हेतु भारद्वाज की कहानियों में उपलब्ध होता है।

हिमांशु जोशी -

हिमांशु जोशी की मान्यता है कि जो रचना जीवन के जितना निकट रहती है, वह उतनी ही स्वाभाविक होती है। अपनी कहानियों में वे जीवन की निकटता का परिचय भली-भाँति देते है। यही कारण है कि उनकी अधिकतर कहानियों में ` आम आदमी ` की उपस्थिति महसूस होती है। अब तक आपके पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। आपकी कहानियाँ वस्तु रूप में मुख्यत: तीन केंद्रों के ईर्द-गिर्द घुमती है। प्रथम पर्वताचल का ग्रामजीवन भोले भावुक जन की रोमांचक दरिद्रता, अज्ञानता और शोषण-नियति, द्वितीय समसामयिक पारिवारिक जीवन, उसके विविध आयाम संवेदनीय कोण और परंपरा संघर्ष तथा तीसरा महानगरीय मध्यवर्ग का आधुनिक बोध। तीनों ही स्थिति में ` आम आदमी ` की नियति को रेखांकित करने का सिलसिला नहीं टूटता। हिमांशु जोशी ने मात्रा और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से अच्छा लिखा है। स्पष्ट वैचारिकता, यथार्थ की सही समझ, आँचलिक शब्दावली का पुट, आम आदमी की पक्षधरता, व्यंग्य का सार्थक इस्तेमाल आदि विशेषताओं से युक्त उनकी कहानियाँ कहीं मन को छूती है तो कही बेचैन करती है। अपनी अंतरंग जीवन्ता के कारण हिमांशु जोशी की कहानियाँ निश्चित रूप से पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

निष्कर्ष :

हिन्दी कहानी का जन्म अठारहवी शताब्दी के आठवे दशक में हुआ और तब से अब तक कहानी सौ वर्षों से अधिक का सफर तय कर चुकी है। बीसवी शती के दूसरे दशक में एक-साथ कई नये कहानीकारों की कहानियाँ प्रकाशित हुयीं। जिनमें प्रेमचंद, गुलेरी, प्रसाद, सुदर्शन,

आ. चतुरसेन शास्त्री आदि ने अपनी प्रारंभिक कहानियों से ही भावी संभावनाओं के प्रति आश्वस्त कर दिया था। प्रेमचंद और उनके समानधर्मी लेखकों ने पहली बार हिंदी कहानी की पहचान निर्धारित की। प्रेमचंद स्कूल के कहानीकारों ने अन्तर्गत समष्टि-सत्य को द केंद्र में रखा है तो प्रसाद स्कूल के कहानीकारों ने चरित्रों के अन्तर्जगत के परिवर्तन को प्रधानता दी है।

प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी का विकास मुख्यत: तीन दिशाओं में हुआ। कुछ कहानियाँ मनोवैज्ञानिक धारणाओं के संदर्भ में `व्यक्ति सत्य` के उद्घाटन तक सीमित रही। जैनेंद्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि की अधिकतर कहानियाँ इस प्रकार की हैं। दूसरे प्रकार की कहानियाँ समाज सापेक्ष प्रश्नों से सम्बद्ध हैं और मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित हैं। इस वर्ग के प्रमुख कहानीकार हैं - यशपाल, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, अमृतराय आदि। तीसरी कोटि की कहानियों में दृष्टि-विशेष का अनुशासन नहीं है और उनमें व्यष्टि-सत्य तथा समष्टि सत्य एक साथ अभिव्यक्त हुए हैं। अश्क, अमृतलाल नागर, भगवतीचरण वर्मा आदि कहानीकार इसी वर्ग में आते हैं।

कथ्य और शिल्प की दृष्टि से ताजी और नयी कहानी सन् १९५० से १९६०-६२ तक लिखी गयीं। जिनमें प्रमुख कहानीकार हैं - मोहन राकेश, राजेंद्र, यादव, कमलेश्वर, रेणु, मन्नू भंडारी, निर्मल वर्मा, भीष्म सहानी आदि। नयी कहानी की दुर्बलता उसकी शुरुआत से ही स्पष्ट थी। सेक्स् की ओर रुझान, आयातित जीवन दृष्टि के प्रति मोह, आपसी दलबन्दी आदि कारणों सेरनयी कहानी `पुरानी` लगने लगी। ऐसी

स्थिति में साठोत्तर कहानीकारों ने `कहानी` में फिर से नये पन की माँग की । इसके फलस्वरूप नये कथा-आंदोलन अस्तित्व में आये । उनमें कुछ प्रमुख आंदोलन इस प्रकार हैं - १) अकहानी २) सहज कहानी ३) सचेतन कहानी ४) समांतर कहानी ५) जनवादी कहानी ६) सक्रिय कहानी आदि । इसप्रकार हिंदी कहानी जीवन के विविध T अंगों को स्पर्श करते हुए अपने उतार-चढाव के साथ आगे बढ रही है ।